प्रदेशी राजा की कथा का वाचन

बीदासरवासियों ने की प्रवास बढ़ाने की अर्ज

बीदासर, 24 मार्च।

आचार्यप्रवर ने प्रदेशी राजा और केशी स्वामी के कथा प्रसंगों की चर्चा करते हुए कथा में फरमाया - ''जब प्रदेशी जाने लगा तो केशी स्वामी बोले कि प्रदेशी तुम नीति के जानकार हो, तुम्हारा ज्ञान भी बहुत विशद है बताओ आचार्य कितने प्रकार के होते हैं? प्रदेशी राजा बोला महाराज! तीन प्रकार के आचार्य होते हैं - कलाचार्य, शिल्पाचार्य और धर्माचार्य। कलाचार्य जो कला सिखाता है। प्राचीन काल में कलाओं का बहुत महत्त्व था, जो कला को नहीं जानता उसकी शादी भी नहीं होती। आजकल धन को देखते हैं उस समय कला और शिल्प को देखते थे। दूसरा शिल्पाचार्य जो शिल्प को सिखाते हैं उसमें सारा आजीविका के साधन-यंत्र, अपने-अपने कुल का धंधा, घड़ा बनाना, बर्तन बनाना शिल्प था। धर्माचार्य जो धर्म की कथा, वाचना उपदेश देते हैं। केशी स्वामी ने पूछा तीनों के प्रति क्या व्यवहार होता है? कलाचार्य को उपहार दिया जाता है, उनकी आजीविका के साधन दिया जाता है, शिल्पाचार्य को धन आदि दिया जाता है, धर्माचार्य को विनय किया जाता है।'' ''केशी स्वामी बोले कि प्रदेशी तुम अतिक्रमण कर रहा है? विनय किये बिना सीधा जा रहा है। वह एक क्षण मौन रहा है। बोला मैं नीति से अभिज्ञ हूं। आपके प्रति मेरा क्या कर्त्तव्य है। आप मेरे धर्माचार्य हो गए। आपसे क्षमा याचना किये बिना कैसे जाऊं। मैं आपसे खमत खामणा कर लूंगा। आपसे विनय कर लूंगा आपको गुरु बना लूंगा। मैंने अर्थपार्श्व का धर्म स्वीकार कर लिया है यह बताऊंगा तो कोई नहीं मानेगा। राजा प्रदेशी राजा जाकर अपनी रानियों, मंत्रियों के साथ आता है और सबके सामने केशी स्वामी को वंदन करता है और सबके सामने कहता है कि मैंने केशी स्वामी को गुरु स्वीकार कर लिया और यह भी स्वीकार लिया कि 'आत्मा अलग है और शरीर अलग है।' यह बात सुनकर सब हकेबके रह जाते हैं।''

युवाचार्यप्रवर ने कहा कि मनुष्य का शरीर अनित्य है वह कभी नष्ट होने वाला भी है। शरीर में विभिन्न अवस्थाएं आती है। व्यक्ति यह समझने का प्रयत्न करे कि शरीर स्थायी नहीं है केवल व्यक्ति की आत्मा ही स्थायी है। मनुश्य केवल अस्थायी पर ही नहीं स्थायी पर ध्यान दे तो उसका कल्याण हो सकता है।

इस अवसर पर आचार्य महाप्रज्ञ प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री बाबूलाल सेखानी, श्री जंवरीमल बैंगानी, श्री भेंरूदान बच्छावत, श्री मालचन्द कोठारी सहित समिति के सदस्यों ने बीदासरवासियों की तरफ से बीदासर में और अधिक समय देने की अर्ज की। प्रत्युत्तर में आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि लाडनूं की तरफ विहार करने का दिन निर्धारित है जो अक्षय तृतीया के दिन सायं को 27 अप्रैल को है, उसमें परिवर्तन करना कठिन लग रहा है।

- अशोक सियोल